सांभर के चौहान वंश -

- वासुदेव चौहान
- दुर्लभराज प्रथम
- गुवक प्रथम
- गुवक द्वितीय
- चन्दन राज चौहान
- वाकपतिराज प्रथम
- सिंहराज
- विग्रहराज द्वितीय
- दुर्लभराज द्वितीय
- गोविंदराज तृतीय
- वाकपतिराज द्वितीय
- पृथ्वीराज प्रथम

वासुदेव चौहान ने 551 ई. में सांभर झील के आसपास चौहान वंश की स्थापना की।

वासुदेव चौहान

- वासुदेव चौहान को **चौहान राजवंश का संस्थापक/आदिपुरुष/मूलपुरुष** माना जाता है।
- वासुदेव चौहान ने 551 ई. में सांभर झील के आसपास चौहान वंश की स्थापना की और अहिछत्रपुर को अपनी राजधानी बनाया।
- बिजोलिया शिलालेख के अनुसार सांभर झील का निर्माण वासुदेव चौहान ने करवाया था।

दुर्लभराज प्रथम

- दुर्लभराज प्रथम प्रतिहार शासक **'वत्सराज'** का सामन्त था, वत्सराज के साथ रहते हुए बंगाल के धर्मपाल को हराया था।
- दुर्लभराज प्रथम ने त्रिपक्षीय संघर्ष (प्रतिहार, पाल व राष्ट्रकूट) में भाग लिया और वह मारा गया।
- इसके समय अजमेर पर प्रथम बार मुसलमानों का आक्रमण हुआ।

Accelerate your study with educlutch.com

गुवक प्रथम

- गुवक प्रथम प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय का सामन्त था। नागभट्ट द्वितीय ने गुवक को **'वीर'** की उपाधि दी।
- उसने हर्षनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। जो चौहानों के कुलदेवता है।
- प्रारम्भ में चौहान शासक गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे। गुवक प्रथम ने पहली बार अपना स्वतंत्र शासन स्थापित कर गुर्जर प्रतिहारों की अधीनता से चैहानों को मुक्त किया।

गुवक द्वितीय

- गुवक द्वितीय ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अपनी बहन कलावती का विवाह कन्नौज शासक **'भोजराज'** से किया।

चन्दन राज चौहान

- चन्दनराज ने दिल्ली के तोमर शासक रूद्र को पराजित किया।
- चन्दनराज की पत्नी **रूद्राणी** यौगिक क्रिया में काफी निपुण थी तथा वह शिवभक्त थी, प्रतिदिन 1000 दीपक अपने इष्ट देव महादेव के सामने जलाकर पुष्कर झील में समर्पित करती थी।

वाकपतिराज प्रथम

- हर्षनाथ शिलालेख में इसे **'महाराज'** की उपाधि दी गई।
- इसी के शासनकाल में राष्ट्रकूटों ने प्रतिहारों की शक्ति को नष्ट कर दिया, जिसका फायदा उठाकर वाकपतिराज प्रथम ने प्रतिहारों के कई भाग अपने राज्य में मिला लिए।
- वाकपतिराज ने अनेक युद्ध किये। पृथ्वीराज विजय के अनुसार इसने 188 युद्ध किये थे।

सिंहराज

- सिंहराज गुर्जर प्रतिहार शासक देवपाल का सामन्त था। इसने दिल्ली के तोमरों व प्रतिहारों को हराया। दोनों शत्रुओं ने मिलकर सिंहराज की हत्या कर दी।
- हर्षनाथ शिलालेख के अनुसार इसने सेनापति की हैसियत से तोमर शासक **'सलवण'** को परास्त किया था।
- सिंहराज ने महाराजाधिराज, परमभट्टारक तथा परमेश्वर की उपाधि धारण की थी।

EduClutch

विग्रहराज द्वितीय

- विग्रहराज द्वितीय प्रारम्भिक शासकों में सबसे प्रभावशाली व योग्य शासक था।
  इन्होंने अन्हिलवाड़ा के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम को हराया और उसे कर देने के लिए विवश किया।
- भड़ौच (गुजरात) में अपनी कुलदेवी **'आशापुरा माताजी'** का मंदिर बनवाया।
- इसी के समय का सीकर जिले की हर्ष पहाड़ी पर हर्षनाथ शिलालेख निर्मित हुआ। हर्षनाथ शिलालेख से विग्रहराज के शासनकाल के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

दुर्लभराज द्वितीय

- दुर्लभराज द्वितीय ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- अभिलेखों में इसे **'दुर्लघ्यमेरू'** (जिसकी आज्ञा का कोई उल्लंघन ना करे) कहा गया है।
- इसने नाडोल के महेन्द्र चौहान को हराया।

गोविन्दराज तृतीय

- पृथ्वीराज विजय में गोविन्दराज तृतीय को **'वैरीघरट्ट'** (शत्रुओं का संहार करने वाला) कहा गया है।
- फरिश्ता ने गोविन्द तृतीय को गजनी के शासक को मारवाड़ में आगे बढ़ने से रोकने वाला कहा है।

वाकपतिराज द्वितीय

- वाकपतिराज द्वितीय ने मेवाड़ शासक अम्बाप्रसाद को युद्ध में मार दिया और ख्याति प्राप्त की।
- वाकपतिराज द्वितीय के पुत्र लक्ष्मण चौहान ने 960 ई. में नाडौल में चौहान वंश की स्थापना की।

पृथ्वीराज प्रथम

- पृथ्वीराज प्रथम ने **'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
- प्रबन्ध कोष में इसे **'तुर्क सेना का विजेता'** कहा गया है।
- इसने 1105 ई. में 700 चालुक्यों को मारा, जो पुष्कर में ब्राह्मणों को लूटने आये थे।
- यह शिव भक्त था। सोमनाथ मार्ग में यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की थी।

EduClutch